बौद्ध धर्म के चार आर्य सत्य

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,
पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

महात्मा बुद्ध के उपदेशों को मानने वाले बौद्ध कहलाते हैं। बौद्ध धर्म भारत का प्राचीन धर्म है। बौद्ध धर्म का विकास केवल भारत में ही नहीं बल्कि विश्व के अनेक देशों में है। बौद्ध धर्म विश्वव्यापी धर्म है। बौद्ध धर्म के सिद्धांतों में चार आर्य सत्यों का बहुत महत्व है। भगवान् बुद्ध ने यद्यपि आत्मा के अस्तित्व को नहीं स्वीकार किया था, किन्तु पुनर्जन्म, कर्म, प्रतीत्यसमुत्पाद, निर्वाण, बंध आदि सिद्धांतों की व्याख्या की है। बौद्ध धर्म मानवतावादी धर्म है। यह धर्म मानव के अस्तित्व को और उसकी विकास क्षमता को महत्व देता है। बौद्ध धर्म ईश्वरवाद में विश्वास नहीं करता। बौद्ध धर्म का मानना है कि मानव अपनी क्षमता के द्वारा सबकुछ प्राप्त कर सकता है। इसलिए मानव को अपनी शक्ति का ज्ञान होना चाहिए।

भगवान बुद्ध के मन में संसार के भोग विलास के प्रति आसक्ति नहीं थी। जन्म, मृत्यु, दुःख आदि के मूल को खोजने के लिए उनके मन में तड़प थी। इसीलिए संसार से विरक्त होकर सत्य की प्राप्ति के लिए एकान्त में जाकर तपस्या करने लगे। घनघोर तपस्या करने के पश्चात् उन्हें यह अनुभव हुआ कि सत्य को कठोर तपस्या के द्वारा नहीं प्राप्त किया जा सकता। इसलिए उन्होंने मध्यम मार्ग अपनाया। उनके लिए सत्य का मार्ग मध्यम मार्ग था। भगवान बुद्ध ने चार आर्य सत्यों का उपदेश दिया। यह सत्य है– दुःख है, दुःख समुदाय है, दुःख निरोध अर्थात निर्वाण है और दुःख निरोध का मार्ग अर्थात निर्वाण मार्ग है। उनके अनुसार सांसारिक जीवन दुःखों से परिपूर्ण है। जो इन चार आर्य सत्यों को जान लेता है, वह संसार सागर से मुक्त हेा जाता है।

प्रथम आर्य सत्य है यह संसार दुःखों से व्याप्त है। जन्म लेना दुःख है, बुढ़ापा दुःख है, मरण दुःख है, शोक करना दुःख है, विलाप करना दुःख है, चिन्तित होना दुख है, इच्छा की पूर्ति न होना दुःख है। प्रिय से वियोग और अप्रिय का संयोग दुःख है। पंच उपादान या शरीर ही दुःख

है। इस संसार में दुःख के अतिरिक्त किसी का भाव नहीं है। सभी प्रकार के दुःखों को सहने वाले संसार में बार–बार जन्म लेकर प्रिय के वियोग तथा अप्रिय के संयोग के कारण आंसू बहाते हैं। इस संसार को दुःख से परिपूर्ण देखकर भगवान बुद्ध ने इस सत्य की देशना की। भगवान बुद्ध ने इसे प्रथम आर्य सत्य कहा।

द्वितीय आर्य सत्य है– दुःख समुदाय अर्थात दुःखों की उत्पत्ति। कोई भी दुख अकारण उत्पन्न नहीं होता। किसी न किसी कारण से दुःख प्रकट होता है। संसार की कोई भी घटना अकारण नहीं होती। प्रत्येक कार्य का कोई न कोई कारण होता है। कार्य कारण नियम से पूरा विश्व संचालित होता है। यदि दुःख है तो इसका कारण भी अवश्य होना चाहिए। दुःख समुदाय के कारण जन्म–मरण होता है। इसे जन्म–मरण चक्र या भव चक्र भी कहते हैं। इसके बारह अंग हैं जो भूत, वर्तमान और भविष्य जीवन से सम्बन्धित हैं। अविद्या, संस्कार, विज्ञान, नामरूप, षड़ायतन, स्पर्श, वेदना, तृष्णा, उपादान, भव, जाति और जरा मरण ये बारह तत्व हैं। वर्तमान जीवन का कारण अतीत जन्म है तथा भविष्य जीवन वर्तमान जीवन का कार्य है। इस प्रकार भूत, वर्तमान और भविष्य सभी कार्य कारण नियम में बंधे हैं। गत आगत और अनागत सभी एक ही चक्र में घूम रहे हैं। यही भवचक्र या संसार चक्र है। जन्म–मरण का यह चक्र निरन्तर चलता रहता है। इस द्वादश निदान को ही बौद्ध दर्शन में दुःख समुदाय कहा गया है। अविद्या से संस्कार, संस्कार से विज्ञान, विज्ञान से नामरूप, नामरूप से षडायतन, षडायतन से स्पर्श, स्पर्श से वेदना, वेदना से तृष्णा, तृष्णा से उपादान, उपादान से भव, भव से जाति या जन्म, जाति से जरा मरण का चक्र चलता रहता है। भगवान बुद्ध ने बारह वर्षों तक अनवनत तपस्या करके इस सत्य को प्राप्त किया। मनुष्य के जन्म का कारण कोई और नहीं, वह स्वयं अपना कारण है। यदि हमारे अन्दर जन्म की इच्छा नहीं होती तो हम संसार में नहीं आते। मनुष्य की इच्छा को ही जन्म का कारण कहा गया है।

तृतीय आर्य सत्य के रूप में भगवान बुद्ध ने जन्म–मरण का निदान ही निर्वाण है, जिसकी खोज में महात्मा बुद्ध ने संसार को छोड़ा। यह भव बन्धन का सर्वथा विनाश है। इसे प्राप्त करने से ही जन्म का स्रोत बन्द हो जाता है। स्रोत के बन्द होने से संसार सर्वथा के लिए छूट जाता है। निर्वाण निर्वेद की अवस्था है। जब शरीर धारण की क्रिया समाप्त हो जाती है तो

शरीर और संसारजन्य क्लेष का अंत हो जाता है। निर्वाण प्राप्त कर मनुष्य जन्म ग्रहण नहीं करता। भगवान बुद्ध ने कहा है कि निर्वाण ही अमृत है। जिसने इस रस का पान कर लिया वह अमर हो जाता है।

चतुर्थ आर्य सत्य दुःख निरोध मार्ग है। जिन कारणों से दुःख उत्पन्न होता है, उन कारणों के विनाश का उपाय ही निर्वाण मार्ग कहा जाता है। इसके आठ अंग हैं– सम्यक् दृष्टि, सम्यक् संकल्प, सम्यक् वाक्, सम्यक् कर्मान्त, सम्यक् आजीव, सम्यक् व्यायाम, सम्यक् स्मृति और सम्यक् समाधि। इस अष्टांगिक मार्ग को प्रज्ञा शील और समाधि नामक त्रिरत्न में विभाजित किया गया है। यह अष्टांग मार्ग ही सर्वश्रेष्ठ मार्ग है। इसका अनुसरण करने से निर्वाण लाभ हो जाता है। निर्वाण तृष्णा का अंत है। भगवान बुद्ध के उपदेशों का सार इन चार आर्य सत्यों में समाहित है।